(Mantra to achieve the powers)
आर्थिक, सामाजिक एंव शासकीय शक्ति प्राप्ति हेतु मंत्र :-

अनेकों बार ऐसा देखने में आया है कि हम आर्थिक, सामाजिक एवं राजकीय शक्ति प्राप्त करने हेतु अनेकानेक उपाय करते है, परन्तु हमारा कोई प्रयोग सफल नहीं हो पाता है। इस संदर्भ में श्री दुर्गा सप्तशती के कई ऐसे मंत्र हैं, जिनका प्रयोग विशिष्ट रूप से किया जाता है। लेकिन यदि उन मंत्रों के साथ सम्पुट लगाकर प्रयोग में लाया जाये तो वे त्वरित और निःसंदेह फल प्रदान करते हैं।

इसी संदर्भ में मैं श्री दुर्गा सप्तशती से सम्बन्धित एक सम्पुटित मंत्र का उल्लेख कर रहा हूँ । मेरा आपसे आग्रह है कि यदि आपने अनेकों अनुष्ठान, जप, पूजा आदि कर लिये हैं और आप अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके हैं, तो कृपया सच्ची लगन और पूर्ण समर्पण भाव के साथ भगवती दुर्गा जी के इस सम्पुटित मंत्र का दस हजार की संख्या में एक बार अनुष्ठान अवश्य करें । उसके उपरान्त एक हजार की संख्या में शुद्ध घी, तिल, खीर, गुग्गुल से आहुतियां दें। समिधा में पालाश का प्रयोग करें । उसके बाद १०८ बार तर्पण एवं ११ बार मार्जन करके नौ अथवा श्रद्धानुसार कुमारियों को भोजन करायें। अपने बडे-बुजुर्गों एवं गुरूदेव का आशीर्वाद प्राप्त करें। निश्चय ही आपको सफलता प्राप्त होगी ।

संकल्प आदि के उपरान्त सर्वप्रथम विनियोग करें-

विनियोगः- ॐ अस्य श्री सृष्टि-स्थिति-विनाशानां इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्री महा सरस्वती देवता, प्रीं बीजं, श्रीक्षुधा शक्तिः, श्रीतारादि-दश महाविद्याः, सतो गुण प्रधान त्रिगुणा, घ्राण-प्रधान-पंच ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर प्रधान पंच कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पंच तत्वानि तत्वं, पंच कलाः ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्री

जगदम्बा-योगमाया भगवती दुर्गा प्रसाद सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः- श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे-शिरसि, श्री महा सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे-हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे-लिंगे, श्रीक्षुधा-शक्तयै नमः दशारे नाभौ, श्री तारादि दश महाविद्याभ्यो नमः षोडशारे-कंठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त रसाय नमः चेतसि, कर प्रधानपंच कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन स्वराय नमः कंठ मूले, पंच तत्वानि तत्वेभ्यो नमः चतुरारे गुदे पंच कलाभ्यो नमः करतले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुराराग्याभि-वृद्धयर्थं श्री जगदम्बा-योगमाया भगवती दुर्गा प्रसाद सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अंजलौ ।

	कर न्यासः	षडंग न्यास
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सृष्टि स्थिति विनाशानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
शक्ति भूते सनातनि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
गुणाश्रये गुणमये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र त्रयाय वौषट्
नारायणि नमोऽस्तु ते	करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान

आरूढा काल-चक्रे रचति स्थिति-विनाशाग्र-सम्मोहयित्री ।
हंस-ब्रह्म-स्वरूपिणी जल-धरा शारदाम्बा सदा प्रसन्ना ।।

मंत्र

ॐ ऐं प्रीं नमः सृष्टि-स्थिति-विनाशानां, शक्ति-भूते सनातनि! गुणाश्रये गुण-मये,

नारायणि नमोऽस्तु ते नमो प्रीं ऐं ॐ ।।

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919675778193
Email ;- shaktisadhna@yahoo.com
Web : www.anusthanokarehasya.com

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

For Purchasing Books Contact 9410030994

1. Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

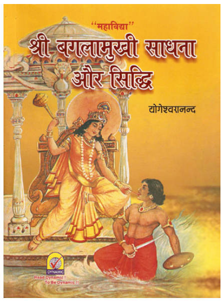

2. Mantra Sadhana

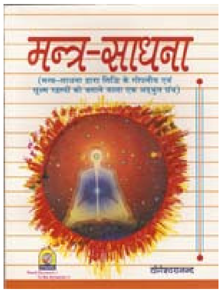

3. Shodashi Mahavidya

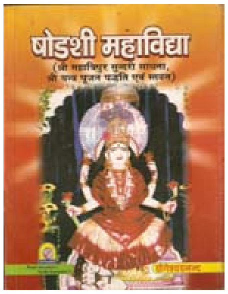
षोडशी महाविद्या
(श्री महात्रिपुर सुन्दरी साधना,
श्री चक्र पूजन पद्धति एवं स्तवन)